ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592668

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

वर्तमान कालीन भारतीय कला-समकालीन कला के संदर्भ में

सचिन केसरवानी [1]
[1] कला शिक्षक, कौशाम्बी उ0प्र0।

शोध-सारांश
कला का समग्र विकास ऐतिहासिक, सामाजिक प्रक्रिया का अंग है। कलाकार नित-नवीन प्रयोगों के माध्यम से नये आयाम स्थापित करता है। वर्तमान समय में भारत ही नहीं अपितु समस्त विश्व में प्रयोगधर्मिता को स्पष्ट रूप से चिन्हित किया जा सकता है। जैसा कि परिवर्तन एक निरन्तर प्रक्रिया है जो आदिकाल से आज तक विद्यमान है जिसमें प्रचलित मान्यताएं पीढ़ियों द्वारा स्वीकृत होती हुई आगे बढ़ती है। किन्तु एक विचारशील सजग समुदाय उन मान्यताओं को अस्वीकार करते हुए एक नवीन दिशा एवं नवीन मूल्यों की ओर समाज को ले जाता है। यहीं से परिवर्तन प्रारम्भ होता है जितनी तीव्रता से जीवन के अर्थ परिवर्तित हो रहे हैं उतनी ही तीव्रता से कला में परिवर्तन हो रहा है।

मुख्य शब्द – वर्तमान कालीन, कला-समकालीन, संदर्भ

Cite This Article: सचिन केसरवानी. (2019). "वर्तमान कालीन भारतीय कला-समकालीन कला के संदर्भ में." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 281-284. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592668.

कला का यह परिवर्तन समकालीन कला के रूप में हमारे समक्ष है। जिनमें नवीन प्रयोग कला का पर्याय बनते जा रहे है। कलाकार सामूहिक पहचान से दूर व्यक्तिगत मौलिकता की ओर अधिक आकृष्ट है। वस्तुतः आधुनिकता या समकालीनता का तात्पर्य है नवीन दिशा खोजने एवं मौलिक सृजनात्मकता के माध्यम से समाज की नवीन चेतना प्रदान करते हुए प्रोन्नति की ओर अग्रसर करना। समसामयिक कला जीवन की नवीनताओं, सृजनात्मक सम्भावनाओं, गहन संवेदनाओं तथा वैचारिक शक्ति के साथ जीवन को समझने का एक प्रयास है। आज कलाकार कल्पनाशील होकर नवीन रूपों का जो प्रकृति से न मिल रहे हो, निर्माण करना चाहता है।

इसके अलावा भारतीय कला की अवधारणा सदैव हमारे धार्मिक विश्वासों से संबंधित रही है। यहाँ तक कि तात्विक दृष्टिकोण तक विभिन्न चित्रमय युक्तियाँ व चाक्षुष आकार, सम्बन्धी भाषा, प्रतीकात्मक व व्यंजक रंग और रैखिक प्रभावों की रचना पारम्परिक व लोक कलाओं में समकालीन कलाकारों में एक जैसा है। इन चाक्षुष आकारों का खूब अध्ययन किया गया है। इसी तरह आंतरिक दुनियाँ के बिंब को, जिसके प्रति भारतीय कलाकार आकर्षित रहे है, समकालीन कलाकारों ने व्यापकता से अपनाया है। इस प्रकार समसामयिक कला व्यक्तिवादी और प्रयोग परख है। आज विषय वस्तु की सीमाएँ टूट चुकी है और माध्यमों की भी सीमा नहीं रही। समकालीन कलाकार विज्ञान, तकनीकों, कम्प्यूटर, संचार माध्यमों के बीच रहता है इसलिए उसकी

प्रतिभा एवं सृजनशीलता उसे निरन्तर चलने के लिए प्रेरित करती है इस तरह समसामयिक कला प्रयोगवादी है। प्रयोगवाद में प्रवाह है तथा प्रवाह में गति व जीवन की अनुभूति है।

समकालीन कला की दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं है-वैचारिकता तथा विरूपण। जो एक-दूसरे की पूरक है। वैचारिकता द्वारा जीवन के अनुरूप समकालीन कला प्रवृत्तियों को विकसित किया जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक युग की समकालीन कला में नवीनतम कला सृजन होता है जो अतीत से भिन्न होता है। वर्तमान में अतीत से भिन्न व बेहतर सृजन ही समकालीन कला को उद्‌बोधित करता है। इसके विचार या बौद्धिक स्तर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विचार द्वारा ही नवीन प्रयोग चाहे व तकनीकों में या कला सिद्धान्तों में, माध्यमों में या सामग्री में किये जाते है। दूसरी अवधारणा है विरूपण। विरूपण का तात्पर्य रूपान्तरण से है। दृश्य जगत के पदार्थों को कलाकार निजी वैचारिक व अनुभूत दृष्टि के अनुसार आरोपण द्वारा रूपान्तरित करता है। यह रूपान्तरण रंगों, रूपाकारों, संयोजन के सिद्धान्तों, तकनीक व माध्यम सभी दृष्टियों से किया जा सकता है। इन तत्वों में विरूपण द्वारा सौन्दर्यशास्त्र की नवीन परिभाषा व अवधारणा स्थापित की जाने लगी है, जो युगीन परिस्थितियों के अनुरूप है। चाक्षुष भाषा की गणित ही परिवर्तित हो गयी है।

समसामयिक कला मूलतः अतीत की कला से भिन्न है तथापि एक अन्तर्राष्ट्रीय शैली के विकास के फलस्वरूप वह अतीत की विविध संस्कृतियों से प्रभवित है। समकालीनता को मानसिकता भी कहा जा सकता है, जो नए जीवन संदर्भो को उनके नए आयामों में जीवन रूप में प्रस्तुत करती है। समकालीनता समय सापेक्ष होते हुए भी व्यापक परिवेश से जुड़ी है। वर्षो पहले चित्रित की गयी कृति उस समय की समकालीन थी और आज की कृति आज की समकालीन है। हर युग की अपनी समकालीनता होती है। समकालीनता की आत्मा अतीत और भविष्य दोनों से जुड़कर बनती है। समकालीनता के भावबोध को समझने के लिए सदियों और परम्पराओं से विमुक्त होना पड़ता है। कालगत परिवर्तित, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और अर्थ व्यवस्था का तीखा अहसास भी रहता है।

कला चाहे प्रागैतिहासिक काल की हो या प्राचीन अथवा मध्यकालीन, आज भी देखी जाती है, समझी जाती है और सराही भी जाती है क्योंकि वह परम्परा है। प्राचीनकाल की होने के कारण इसका महत्व कम नहीं हो जाता, बल्कि उसका मूल्य बढ़ जाता है। उसे देखकर हमें अपना प्राचीन इतिहास, संस्कृति और समाज की प्रगति का पता चलता है। समकालीन कला अपने समाज का दर्पण होती है। जैसे-जैसे उसका रूप बदलता है, कला का रूप भी बदल जाता है। कला की अभिव्यक्ति कभी एक सी नहीं रहती। समकालीन का अर्थ आधुनिक नहीं है, जो प्राचीन से भिन्न है वही आधुनिक है। आधुनिक युग के अनुकूल शैलीगत परम्पराओं की प्रवृत्ति ही आधुनिकता है। समकालीन का अर्थ एक पीढ़ी से होता है, अतः यह शब्द सीमा बहुत संकुचित है। आज का कलाकार अतीत अथवा परम्परा के स्थान पर आधुनिक समय की परिस्थितियों एवं अपने व्यक्तिगत विचारों को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के परम्परावादी समकालीन तो हो सकते हैं, पर आधुनिक नहीं।

समसामयिक कला के संदर्भ में एक विचारणीय प्रश्न प्रयोजन का भी है। साधारणतः कला का प्रयोजन मानसिक, सुख-शान्ति, आनन्द व नवीन सौन्दर्य की उत्पत्ति करना है, किन्तु समकालीन कला के ये तत्व मात्र एक वर्ग विशेष को ही प्रभावित करते है तथा साधारण व्यक्ति इसका आनन्द नहीं ले पाता। अर्थात् उससे तादात्म्य स्थापित नहीं कर पाता। इसका प्रमुख कारण है-समसामयिक कलाकृतियों में वैज्ञानिकता एवं उच्च बौद्धिकता का समाहार होना। इस कला को वही परख सकता है जिसका बौद्धिक स्तर कलाकार के बौद्धिक स्तर से मेल खाता हो। नए रूपाकारों, नए औजारों तथा नए संवेदनाओं के साथ प्रयोग करने के बावजूद समकालीन कला अभी तक लोगों के जीवन का अंग नहीं बन सकी है, जबकि किसी भी समाज में कला की

एक सुनिश्चित भूमिका होती है। समसामयिक कला की दूसरी समस्या है सम्प्रेषण। आज कलाकार सृजन की रोमांचकारी उत्तेजना को ही कला का प्रयोजन मानता है। इस रोमांचकारी उत्तेजना का दर्शक में भी संचार होना चाहिये। किन्तु कला को साधारण व्यक्ति के जीवन की आवश्यकता के रूप में न लेकर तिरस्कृत करता है। इसी कारण से वह कलाकृति से तादात्म्य नहीं बना पाता।

समकालीन कला को सामान्य रूप से स्वीकार करने में शायद समझदार दर्शकों की कमी भी एक बाधा रही है। इसीलिए कला के सौन्दर्यानुभव में अधिकांश लोगों की भागीदारी नहीं रही है। इसके बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि समकालीन कला ने हमारे युग को, व्यवहार को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, हम आधुनिक वास्तुकला में प्रयुक्त आकारों को आज सहज ही स्वीकार करने लगे है और इन्हें महज ज्यामितिक रूपाकार नहीं मानते, जबकि हम जानते है कि इन आकारों को सबसे पहले आधुनिक चित्रकारों ने ही अपनी कृतियों में प्रयुक्त किया था। समसामयिक कला में जीवन की नवीनताओं, समसामयिक सृजनात्मक, जीवनचर्या, लोक-व्यवहार, परस्पर सम्बन्धों, फैशन आदि में जो बदलाव आया है वही समसामयिक कला में भी परिलक्षित होता है। नवीन प्रयोग व परिवर्तन प्रगति के परिचायक है। एक वर्ग विशेष को छोड़कर साधारण वर्ग को भी इन परिवर्तित होती हुई परिस्थितियों से सामंजस्य बनाते हुए कला से तादात्म्य स्थापित करना आवश्यक है।

समसामयिक कला की नवीन सम्भावनाओं को कला व्यवसायियों ने भी बहुत प्रभावित व प्रोन्नत किया है। कला व्यवसायी स्वयं को समाज व कलाकार के मध्य एक सेतु के रूप में स्थापित करते है। कला एक उद्योग के रूप में अचानक प्रकट हुई है तथा इसका विस्तृत बाजार बन गया है। भारतीय कलाकृतियों के लिए विश्व पटल पर एक नवीन जोश दृष्टिगत होने लगा है। कला निवेश को आज अधिक सुरक्षित माना जा रहा है अपेक्षाकृत अन्य परम्परागत क्षेत्रों में निवेश के। बड़े शहरों में कला व्यवसायी नवीन कला दीर्घाएं खोल रहे है। समकालीन कला व्यवसाय ने देश में सांस्कृतिक पर्यावरण को प्रभावित किया है। यद्यपि देश में प्राइवेट आर्ट गैलरियों की बढ़ती हुई संखया का समकालीन भारतीय कला के विकास तथा उनका बाजार बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है, दो अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का योगदान भी उतना ही महत्वपूर्ण रहा है-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध नीलाम घरों द्वारा कला की नीलामी का, जिसमें से पहली निलामी बंबई में क्रिस्टीज द्वारा सम्पन्न हुई थी तथा दूसरी दिल्ली में सदबीज द्वारा करायी गयी थी। क्रिस्टीज प्रति वर्ष लन्दन, न्यूयार्क व हांगकांग में कलाकृतियों की नीलामी करती है। नेवाइल तुली का ओशियंश तथा अमिताभ व नंदिनी गांधी का सैफरन आर्ट भी भारत में ऑनलाइन नीलामी गतिविधियाँ संचालित कर रहा है।

कला-सृजन पर 'बाजारवाद' का प्रभाव समकालीन कलाकारों को चुनौती है। समकालीन समाज की अवधारणाएँ, उपभोक्तावादी, संस्कृति, बदली हुई जीवनशैली तथा 21वीं शदी की चुनौतियों ने हमारे देखने-सुनने, काम करने के तरीके को प्रभावित किया है। वर्तमान परिदृश्य चिन्तनशील एवं प्रयोगधर्मी कलाकारों के लिए चुनौती भरा है। तेजी से हो रहे सांस्कृतिक अवमूल्यन के कारण हमें तलाशने होगे, यह विचार करना होगा कि सामाजिक परिस्थितियों से हमारा तारतम्य क्यों नहीं है।समकालीन कला वस्तुतः 21वीं शताब्दी की उत्तेजक गतिविधियों व वैचारिक क्रान्ति की द्योतक है। आज कलाकार ने कला को पूर्णतया तकनीकी व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा है। यही कारण है कि दर्शक की सक्रिय भागीदारी कलाकार की अनुभूति व कला से नहीं हो पाती फिर भी आज कला में विस्तृत विविधता, नवीन खोजों व बौद्धिकता को नकारा नहीं जा सकता। आज कला की सभी विधाएं चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, व्यवहारिक कला, ग्राफिक कला आदि में सह अस्तित्व है। इन केन्द्रों के कला परिदृश्यों का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ा है किन्तु यह दुविधापूर्ण व खेदजनक स्थिति है कि नवीन संवेदनाओं के साथ नवीन प्रयोगों को अपनाते हुए समकालीन जीवन का

प्रतिबिम्ब होते हुए भी समकालीन कला जीवन का अंग न बन सकी है। प्रयास अवश्य है कि जिसमें तथाकथित उच्च व्यवसायी व बौद्धिक वर्ग को समकालीन कला की समझ मूल्य एवं महत्व का बोध हो तथा जनसाधारण तक पहुँचकर यह समकालीन कला उनके जीवन का अंग बने तथा सामाजिक स्तर पर मूल्यवान हो, यह समय पर ही निर्भर है।

संदर्भ

[1] भारत की समकालीन कला: एक परिपेक्ष्य-प्राणनाथ भागो प्रकाशक-नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली।
[2] समकालीन भारतीय कला-डॉ0 ममता चतुर्वेदी प्रकाशक-राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
[3] कलाओं का मानस मंथन-डॉ0 अजय जैतली प्रकाशक-नव साक्षर संस्थान, प्रयागराज
[4] आधुनिक भारतीय समकालीन कला-डॉ0 चित्रलेखा सिंह प्रकाशक-साहित्य संगम, प्रयागराज।
[5] चित्र परम्परा और बिहार-श्याम शर्मा प्रकाशक-वातायन मीडिया एण्ड पब्लिकेशन्स प्रा0लि0, पटना।

*Corresponding author.
E-mail address: skesharwani70@ gmail.com